निषेध है। जहाँ कोई उपाय न हो, उस परिस्थिति में पशु-हिंसा की जा सकती है; परन्तु उसे भी यज्ञ में अर्पित करना चाहिए। जो मनुष्य पारमार्थिक उन्नति के अभिलाषी हैं, उन्हें तो कम से कम पर्याप्त मात्रा में अन्न, आदि के होते हुए पशु-हिंसा से बचना ही चाहिए। अहिंसा का असली अर्थ किसी भी जीव की उन्नति में बाधा उपस्थित न करना है। पशु एक योनि से दूसरी योनि में उन्नति कर रहे हैं। यदि किसी पशु की हत्या कर दी जाय, तो उसकी उन्नति रुक जायगी। मारे हुए पशु को शेष समय भोगने के लिए उसी योनि में वापस आना होगा; इसके बाद ही किसी श्रेष्ठ योनि में वह प्रगति कर सकेगा। अतः केवल अपनी रसना की तृप्ति के लिए किसी जीव की प्रगति में विघ्न नहीं डालना चाहिए। इस विचारधारा का नाम अहिंसा है।

सत्यम् का अर्थ है किसी स्वार्थवश तथ्य को तोड़े-मरोडे बिना यथार्थ भाषण करना। वेदों में कुछ कठिन अंश हैं, जिनका तात्पर्य प्रामाणिक गुरु से सीखना चाहिए। वेदों को जानने की यही पद्धति है। 'श्रुति' का अर्थ है कि आचार्यमुख से श्रवण करना चाहिए। अपने स्वार्थ के लिए शास्त्रों का मनमाना अर्थ नहीं करना चाहिए। गीता पर अनेक ऐसी टीकायें हैं, जो मूल अर्थ का अनर्थ करती हैं। वाक्य के यथार्थ तात्पर्य को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना चाहिए। इसके लिए सद्गुरु के आश्रय में शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता है।

क्रोध को जीत लेने का नाम **अक्रोधः** है। दुर्जनों द्वारा अपना तिरस्कार होने पर भी शान्त बना रहे, क्योंकि कोप से सम्पूर्ण शरीर दूषित हो जाता है। क्रोध रजोगुण और काम से उत्पन्न होता है; इसलिए सत्त्वगुणी पुरुष को इसे जीत लेना चाहिए। **अपैशुनम्** अर्थात् दूसरों में व्यर्थ दोष-दृष्टि न रखे। निःसन्देह चोर को चोर कहना बुरा नहीं; परन्तु किसी सज्जन को चोर बताना पारमार्थिक उन्नति के बड़ा प्रतिकूल होगा। **ह्रीः** अर्थात् व्यवहार में विनम्रता हो और पापकर्म करने में लज्जा का अनुभव हो। **अचापलम्** का अर्थ है प्रयास की असफलता में भी दृढ़ निश्चय से युक्त रहना। कोई चेष्टा विफल हो जाय तो भी निराश अथवा उद्वेलित न हो। धैर्य और निश्चय के साथ प्रगति-पथ पर अग्रसर होता रहे। **तेजः** का सम्बन्ध विशेषतः क्षत्रियों से है। निर्बलों की रक्षा के लिए वे सदा अति पराक्रम से युक्त रहें। उन्हें अहिंसा का दम्भ नहीं करना चाहिए। आवश्यकता होने पर वे हिंसा से पीछे न हटें।

शौचम् शब्द मन, वाणी और व्यवहार की पवित्रता का वाचक है। व्यापारी-वर्ग को विशेष रूप से शुद्ध व्यवहार करना चाहिए; अतः काला बाजार करना वर्जित है। **नातिमानिता** का अर्थ सम्मान की इच्छा का न होना हैं। यह शूद्रों के लिए है, क्योंकि वे वेदों के अनुसार चारों वर्णों में सब से निम्न हैं। शूद्र व्यर्थ अभिमान न करें और अपनी मर्यादा में ही रहें। समाज में सुचारु व्यवस्था बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि वे उच्च वर्णों का सम्मान करें।

यहाँ वर्णित सभी सोलह गुण दैवी प्रकृति के हैं। अपने-अपने वर्ण और आश्रम